NOVATEUR PUBLICATIONS
JournalNX- A Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN No: 2581 - 4230
VOLUME 6, ISSUE 10, Oct. -2020

शोध–आलेख

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अमृतलाल नागर और उनका उपन्यास

रामईश्वर कुमार,
जे0आर0एफ0 (शोधार्थी)
हिन्दी विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची।

अमृतलाल नागर हिन्दी के एक कथाकार है जिन्होंने आर्दश की जगह यथार्थ का हाथ थामते है। नागर जी अपने कथा–साहित्य में यथार्थ पर बल देते नजर आ रहे है। इसी क्रम में कई बार इनके पात्र 'आत्महत्या' तक कर लेते है। ऐसा नहीं है कि नागर जी पूर्ण यथार्थवादी उपन्यासकार है और आदर्श को बिलकुल भी नहीं जगह दिया है, लेकिन ज्यादातर इनके साहित्य में खासकर उपन्यास में यथार्थ ही देखने को मिलता है।

अमृतलाल नागर साहित्य के एक ऐसे फलक के जनक थे जो कभी अपने सिद्धांतो से समझौता नहीं कर सकते थे। यह बात इनके उपन्यासों को पढ़ने के बाद पता आसानी से चल सकता है। नागर जी के उपन्यासों में पात्र ढ़ेर सारे मुसीबतों को झेलते हुए नजर आते हैं। प्रेमचंद के बाद अत्यंत मजेदार मुहावरेदार लखनवी भाषा का प्रयोग करनेवाले नागरजी आज भी हिन्दी साहित्य जगत में प्रसिद्ध है। इनके सभी उपन्यासों में कहानी लगभग एक नहीं है सभी की समस्याएँ लगभग एक नहीं है सभी की समस्याएँ भी अलग–अलग है। जीवन के हर मर्म को समझने वाले उपन्यासकार कहे जा सकते है। जो आधुनिक है और आज जीवन–जीने के

लिए एक सहायक भी। उपन्यास आज के समाज के लिए सबसे यथार्थ और मार्मिक चित्रण प्रस्तुत होता है। यह एक सफल विधा है और सशक्त भी कहानी और उपन्यास में बस यही अंतर है कि कहानी किसी एक घटना पर आधारित होता है किसी एक पात्र पर केन्द्रित होता है, जीवन की किसी एक सच को उभारा जा सकता है जबकि उपन्यास में कई घटनाएँ होती है, पात्र की अधिकता होती है और सबसे मूल बात कि इसमें जीवन की कई सारी सच्चाईयों को एक साथ उभारा जा सकता है। इसलिए ऐसा कहा जा सकता है कि आधुनिक समाज के जटिल जीवन की प्रस्तुतति उपन्यास के द्वारा ही संभव है। अमृतलाल नागर हिन्दी साहित्य के इतिहास में एक ऐसा नाम है जिसने हिन्दी साहित्य की अनेक विधाओं जैसे–व्यंग्य, कहानी, उपन्यास, नाटक, रूपक यात्रावृत, संस्मरण, साक्षात्कार आदि की वृद्धि की है। परंतु मूलतः इनकी ख्याति एक उपन्यासकार के रूप में है। जिस उपन्यास के कारण अमृतलाल को एक पहचान मिली उनका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित हैंः–

1. **महाकाल**– अमृतलाल नागर का यह प्रथम उपन्यास है। इस उपन्यास में बंगाल में 1943 ई0 में भीषण अकाल का यथार्थ और जीवंत चित्रण किया है। यह उपन्यास मध्यवर्गीय समाज की घृणा, पीड़ा, संघर्ष और आर्थिक विपन्नता का अंतर्द्वंद्व की यथार्थ करूण गाथा है। इस उपन्यास का नायक पाँचू हैं, जो शिक्षक है, इस उपन्यास में भूख के आगे विवश समाज कैसा रूप ले लेता है इसको दिखाया गया है।

यह एक सामाजिक उपन्यास है। नागरजी ने इस उपन्यास में 'भूख' को मनुष्य के जीवन की सबसे बड़ी दुर्बलता के रूप में दिखाया है। इस उपन्यास का एक और नाम है और वो है– भूख।

पाँचू एक आदर्शवादी और ईमानदार शिक्षक है। इस गाँव में अकाल पड़ जाने के कारण लोग भूख से तड़प रहे है। दाने–दाने के लिए लोग इधर–उधर भाग रहे है। मास्टर पाँचू को भी अपने पापी पेट को भरने की चिंता है। इस उपन्यास में भूख के कारण एक आदर्श और सच्चे शिक्षक का किस प्रकार इन सब चीजों से धीरे–धीरे मोहभंग हो जाता है। इस पर नागरजी गंभीरता पूर्वक दिखाया है। भूख के कारण पाँचू की सारे आदर्श और संस्कार धीरे–धीरे यथार्थ की कटुता से टकराकर भयानक रूप ले लेती है। भूख के कारण रिश्तों के बीच में दरार तो हो गई लेकिन इन रिश्तों के खोखलेपन भी दिख गया। अन्न के अभाव में लोग मर रहे हैं, चीख रहे है, चिला रहे है, लेकिन मदद के लिए कोई नहीं है। सब अपने स्वार्थ साधने में व्यस्त है। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि नागरजी अकाल के बहाने लोगों की इंसानियत को भी टटोलने का प्रयास किये है और उसमें वे सफल भी रहे।

2. **बूँद और समुद्र–** यह उपन्यास नागर जी ने 1956 ई0 में लिखा था। इस उपन्यास की कथा भारतीय मध्यवर्गीय जीवन परिवेश का यथार्थ के कैनवास पर रखा गया है। नागर जी कहीं न कहीं उसी मध्यवर्गीय

NOVATEUR PUBLICATIONS
JournalNX- A Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN No: 2581 - 4230
VOLUME 6, ISSUE 10, Oct. -2020

जीवन को भोग भी रहा था और अपने अनुभव से इसे व्यापक फलक पर ला भी रहे थे। उन्होंने खुद 'बूँद और समुद्र' के भूमिका में कहते है– "इस उपन्यास में मैंने अपना और आपका, अपने देश के मध्यवर्गीय नागरिक समाज का गुण–दोष भरा चित्र ज्यों का त्यों आँकने का यथामति, यथासाध्य प्रयत्न किया है, अपने और आपके चरित्रों से ही इन पात्रों को गढ़ा है।"[1] इस उपन्यास में नागरजी ने एक खास मोहल्ले के माध्यम से सम्पूर्ण भारतीय जीवन को बड़ी ही कुशलता के साथ प्रस्तुत किया है। यह कहानी लखनऊ के एक मुहल्ले में राजाबहादुर सर द्वारका दास के पुरखों की हवेली में उनकी पहली पत्नी 'ताई' अपने पति से अलग होकर रहती हैं। राजाबहादुर जाने–माने रईसो में गिने–जाते थे। लेकिन जब इनकी शादी 'ताई' से हुई थी तो उस समय इनके यहाँ खाने के भी लाले पड़े हुए थे। घरवालों की चाह थी कि ताई 'बेटा' देंगे और वारिस भी। लेकिन ताई ने एक बेटी को जन्म दिया और आठ महीने बाद वह चली भी गई। फिर क्या था घर के लिए वारिस की चाह में राजा बहादुर की दूसरी शादी कर दी गई। जिस दिन नई पत्नी घर से ताई उसे छोड़कर चली गई। तभी से सारे मुहल्ले की ताई बन गई थी। ताई के जीवन में जो करवाहट उत्पन्न हो चुकी थी अब उसका प्रभाव सारे मुहल्ले पर पड़ने लग गया था। लड़ाई–झगड़ा, टोना–टोटका, और आटे के पुतले बना–बनाकर लोगों के घरों में रखकर उनका अनिष्ट चाहने

लगी थी। अंततः कहा जा सकता है कि बूँद व्यक्ति का प्रतीक है और समुद्र समाज का। नागरजी ने बड़ी कुशलता के साथ इस मुहल्ले के माध्यम से संपुर्ण भारतीय सामाजिक जीवन को प्रस्तुत किया है।

3. **शतरंज के मोहरे–** अमृतलाल नागर का यह उपन्यास 1957 ई0 के गदर क्रांति के बाद 1959 ई0 में लिखा गया। यह ऐतिहासिक उपन्यास 1959 ई0 में लिखा गया। यह ऐतिहासिक उपन्यास है जिसमें लखनऊ के नवाबी संस्कृति का यथार्थ चित्रण किया गया है। इस उपन्यास में यह दिखाया गया है कि कैसे लखनऊ का नवाब अपने स्वार्थ नीतियों के कारण विलय हो गया।

4. **सुहाग के नुपूर–** यह उपन्यास 1960 ई0 में प्रकाशित हुई। यह उपन्यास तमिल महाकाव्य 'शिलप्पादिकारम' पर आधारित है। इस उपन्यास में कुलवधू के सुहाग के नुपूर और नगरवधू के नृत्य धुंधरूओं का संघर्ष ही प्रमुख है। इस उपन्यास में त्रिकोणिय प्रेम के माध्यम से नागर जी ने दक्षिण भारतीय सामाजिक समस्याएँ, राजनीतिक संघर्षों, संस्कृति एवं कला आदि के विधि रूपो का चित्रण किया है। नागरजी ने इस उपन्यास में मुख्य रूप से वेश्या बनाम कुलवधू की समस्या को उठाया है।

5. **अमृत और विष–** यह उपन्यास अमृतलाल नागर की प्रसिद्धि का कारण बना। यह उपन्यास 1966 ई0 में लिखा गया है। नागरजी ने इस उपन्यास में अरविंद शंकर के बहाने अपने विचारों को पाठक के

समक्ष पेश किया है। राजनीतिक दाव–पेचों को वे कभी नहीं मानते थे। अरविंद शंकर का गुस्सा इन नेताओं पर फूट पड़ा है– ”वे सरकारी दरबारी काँग्रेसी बेड़ो की भीड़ होगी जिन्हें नगर काँग्रेसाध्यक्ष महोदय मेरी खुशामद में हाँक कर लायेंगे। उन्हें गलतफहमी है कि मैं पण्डित जवाहरलाल जी का दुलारा हूँ।“[2] इस उपन्यास में नागरजी दोहरे कथानक को साथ लेकर चलती नजर आती है। एक तरफ अर्थाभाव से पीड़ित लेखक और स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी अरविन्द शंकर की आत्मकथा है तो दूसरी तरफ आज के नौजवान पीढ़ी और पुरानी मान्यताओं के संघर्ष पर आधारित। इस उपन्यास में अरविन्द शंकर एक लेखक है जो जीवन संघर्ष से जूझ रहे है। वह अपने पारिवारिक जीवन के संघर्ष से लड़ते–लड़ते उदासीन हो चुके है। अरविन्द शंकर के लिए लेखनी ही जीवन है। अगर आप इस उपन्यास को पढ़े और देखे तो पता चलेगा कि इस उपन्यास का जो पात्र है अरविन्द शंकर वो नागरजी के जीवन संघर्ष से काफी मेल जाता है।

6. **सात घूँघट वाला मुखड़ा** – यह 1968 ई0 में अमृतलाल नागर ने लिखा। इस उपन्यास में मूल रूप से एक नारी मसरू बेगम के ह्रदय के मर्म को यथार्थपरक रूप में दिखाया गया है।

7. **एकदानैमिषारण्ये**– यह उपन्यास 1972 ई0 में लिखा गया। यह पौराणिक पृष्ठभूमि पर रचित उपन्यास है। नागर जी इस उपन्यास की

NOVATEUR PUBLICATIONS
JournalNX- A Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN No: 2581 - 4230
VOLUME 6, ISSUE 10, Oct. -2020

भूमिका में अपने उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए लिखा है– "नैमिष आंदोलन को ही मैंने वर्तमान भारतीय या हिन्दू संस्कृति का निर्माण करने वाला माना है। वेद, पुनर्जन्म, कर्मकाण्डवाद, उपासनावाद में ही हुआ। अवतारवाद रूपी जादू की लकड़ी धुमाकर परस्पर विरोधी संस्कृतियों को धुला–मिलाकर अनेकता में एकता स्थापित करने वाली संस्कृति का उदय नैमिषारण्ये में हुआ और यह काम मुख्यतः एक राष्ट्रीय दृष्टि से ही किया गया था।"[3]

8. **मानस का हंस** – यह 1972 ई0 में लिखा गया जीवनीपरक उपन्यास है। इस उपन्यास में तुलसीदास के जीवन एवं व्यक्तित्व को प्रमाणित रूप से बताने का प्रयास किया गया है। इस उपन्यास से भी नागर जी को काफी प्रसिद्धि मिली। तुलसी को जानने के लिए यह उपन्यास मुख्य रूप से याद किये जाते है। इस उपन्यास में नागरजी ने जो तुलसी के जीवन के विविध पक्षों का सजीव चित्रण किया है वो काफी सराहनीय है। तुलसी के जन्म के साथ ही उनकी माँ मर गई थी दूसरे दिन ही उनकी पिताजी भी चल बसे। बच्चे को एक भिखारिन ने पाल–पोस कर बड़ा किया। वहीं तुलसी आज भारतीय जनमानस का चहेता बन गया। नागरजी ने जहाँ एक ओर मानस का हंस में तुलसी जी की प्रमाणिक जीवनी प्रस्तुत करने का प्रयास किया है वहीं दूसरी ओर मध्ययुगीन भारतीय समाज के अलग–अलग पक्षों को भी प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है।

9. **नाच्यौं बहुत गोपाल–** यह उपन्यास नागर जी ने 1978 ई0 में लिखा। यह उपन्यास एक सच्ची घटना पर आधारित है। इस उपन्यास में मेहत्तर जाति की समस्याओं का दर्द मार्मिक रूप देखने को मिलता है। यह उपन्यास एक दलित–उपन्यास है। इस उपन्यास में नागर जी दलित कहें जाने वाले एक ऐसे जाति को उपन्यास के फलक पर लाने का प्रयास किया है, जो समाज के सबसे नीचले हिस्से को जीने को अभिशप्त है। इस उपन्यास में नारी की भी कम भूमिका नहीं है। निर्गुनिया जो ब्राह्मण घर की लड़की रहती है एक बुजुर्ग से शादी कर देने पर कैसे एक मेहत्तर जाति मोहना के साथ भाग जाती है, और भागने के बाद किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। इसको दिखाया गया है, मेहत्तर कहे जाने वाली इस समाज की स्थिति यह है कि वे अपनी बीवियों को साहब के खुशामदी में भेजने को तैयार थे– ″जाना तो तुझे पड़ेगा ही हरामजादी। चाहे हंस क जा, चाहे रोके जा। मेरे पास पन्द्रह सौ रूपये नहीं है कि जमादार और दारोगा और चीप साहब को चटाकर अपने लिए काम पा सकुँ।″[4]

10. **खंजन नयन–** यह उपन्यास 1981 ई0 में लिखा गया है। यह भी जीवनीपरक उपन्यास है। इस उपन्यास में सूरदास के जीवनी और व्यक्तित्व पर यथार्थपरक ढंग से लिया गया है। इस उपन्यास के माध्यम से नागरजी सूरदास के राम पक्ष और काम पक्ष को दिखाने का काम किया है। इस संसार की कोई भी व्यक्ति अपनी कमियों को

पूरा करके ही महान बन जाता है। सूरदास ने भी यही किया। इस उपन्यास में नाव खेमे वाली बालिका से सूरदास के प्रेम संबंधों को दिखाया गया है।

11. **बिखरे तिनके–** यह उपन्यास 1982 ई0 में लिखा गया है। इस उपन्यास में युवा–पीढ़ी के भटकने का यथार्थ चित्रण हुआ है। कथावस्तु की दृष्टि से नागर जी यह उपन्यास उतना विकसित नहीं कर पाए है। इस उपन्यास में नागरजी ने पुरानी पीढ़ी और युवा पीढ़ी के बीच चलने वाली अपनी–अपनी मान्यताओं को लेकर चल रहे संघर्ष को चित्रित किया है। उस उपन्यास में मुख्य रू॰ से नौकरशाहों, भ्रष्टाचारों और रिश्वतखोरों पर करारी चोट की गई है।

12. **अग्निगर्भा–** यह उपन्यास 1983 ई0 में प्रकाशित हुई। इस उपन्यास में शादी के समय दिया जाने वाला 'दहेज' पर यथार्थपरक विचार किया है। इस उपन्यास में एक आधुनिक लड़की की स्वाधीनता पर भी सवाल खड़ा किया है– "यह शादी–ब्याह, कैरियर, सबके बिल्कुल अलग होते है। कुसुम से तो खैर तुलना कर ही नहीं सकती, हाँ तेरे समान में भी विद्याशास्त्र संपन्न पति चाहती हूँ पर मेरे चाहने से क्या सब हो सकता है।........ क्या विचित्र है, यह व्यवस्था कि एक अट्ठाइस वर्ष की बालिग युवती अपनी इच्छा के अनुसार अपने भविष्य के लिए भी कोई निर्णय नहीं ले सकती।"[5]

13. **करवट**– यह उपन्यास 1985 ई0 में लिखा गया। इस उपन्यास में लखनऊ के एक खत्री परिवार की तीन पीढ़ियों का चित्रण किया गया है।

14. **पीढ़ियाँ**– यह उपन्यास 1990 ई0 में लिखा गया है। यह नागर जी का अंतिम उपन्यास है। इस उपन्यास में 'करवट' की कहानियाँ का विस्तार किया गया है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अमृतलाल नागर आधुनिक युग के उपन्यास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाये है।

संदर्भ–ग्रंथ

1. बूँद और समुद्र–अमृतलाल नागर, राजकमल प्रकाशन, तीसरा संस्करण –2015, भूमिका, पृ0सं0–05
2. अमृत और विष– अमृतलाल नागर, लोकभारती प्रकाशन, पृ0सं0–17
3. एकदानैमिषारण्ये– अमृतलाल नागर, लोकभारती प्रकाशन, पृ0सं0–10
4. नाच्यौं बहुत गोपाल– अमृतलाल नागर, राजपाल प्रकाशन, संस्करण–2013, पृ0सं0–17
5. अग्निगर्भा– अमृतलाल नागर, राजपाल प्रकाशन, संस्करण– 2017, पृ0सं0–05